बाल साहित्य सिर्फ बच्चे ही नहीं सभी पढ़ें : दिविक रमेश

प्रतिनिधि बाल कविता संचयन का लोकार्पण करते (बाएं से दाएं) साहित्य अकादमी के सचिव के श्रीनिवासराव, दिविक रमेश, बलराम ●फोटो सौजन्य-साहित्य अकादमी

जागरण संवाददाता, पूर्वी दिल्ली: बाल साहित्य सिर्फ बच्चों के लिए ही नहीं बड़ों के लिए भी है। इसे सभी को पढ़ना चाहिए। बाल मन को समझने के लिए बाल साहित्य सहायक होता है। 195 कवियों की 518 कविताओं में पूरे देश के बाल मनोविज्ञान को जाना-समझा जा सकता है।

इस संकलन में बड़े बाल साहित्यकार की अपेक्षा बड़ी रचना को महत्व दिया गया है। ये बातें साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में पुस्तक प्रतिनिधि बाल कविता-संचयन' के लोकार्पण कार्यक्रम में लेखक दिविक रमेश ने कही।

पुस्तक का लोकार्पण करते हुए दिविक रमेश ने बताया कि इस कविता-संग्रह में नए प्रयोग और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सामने रखा गया है। वहीं, लेखक बलराम ने कहा कि साहित्य अकादमी बाल साहित्य को एक सम्मान की दृष्टि से देख रही है और उसका संवर्धन के लिए लगातार प्रयास कर रही है। इस अवसर पर साहित्य अकादमी के सचिव के श्रीनिवासराव भी मौजूद रहे।

बाल साहित्य सभी के लिए होता है : दिविक

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 15 अक्तूबर।

साहित्य अकादेमी की ओर से हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'प्रतिनिधि बाल कविता-संचयन' का साहित्य अकादेमी की पुस्तक प्रदर्शनी में लोकार्पण किया गया। संचयन के संपादक दिविक रमेश ने कहा कि बाल साहित्य सबके लिए होता है और उसे सभी को पढ़ना चाहिए। इस संचयन की विशेषता बताते हुए उन्होंने कहा कि इस संकलन में बड़े बाल साहित्यकार की अपेक्षा बड़ी रचना को महत्त्व दिया गया है। 195 कवियों की 518 कविताओं में पूरे देश के बाल मनोविज्ञान को जाना-समझा जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस कविता-संग्रह में जहां सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, द्वारिका प्रसाद महाश्वेरी, श्रीप्रसाद एवं निरंकारदेव सेवक की कविताएं हैं तो नए रचनाकारों में दिशा ग्रोवर, सृष्टि पांड्ेय, सुषमा सिंह की भी कविताएं हैं।

साहित्य पुस्तक प्रदर्शनी में प्रतिनिधि बाल कविता-संचयन का लोकार्पण

शाह टाइम्स संवाददाता

नई दिल्ली। साहित्य अकादमी द्वारा हाल ही में प्रकाशित पुस्तक प्रतिनिधि बाल कविता-संचयन का साहित्य अकादमी की पुस्तक प्रदर्शनी में लोकार्पण किया गया। संचयन के संपादक दिविक रमेश ने इस अवसर पर कहा कि बाल साहित्य सबके लिए होता है और उसे सभी को पढ़ना चाहिए। इस संचयन की विशेषता बताते हुए उन्होंने कहा कि इस संकलन में बड़े बाल साहित्यकार की अपेक्षा बड़ी रचना को महत्त्व दिया गया है। 195 कवियों की 518 कविताओं में पूरे देश के बाल मनोविज्ञान को जाना-समझा जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि इस कविता-संग्रह में जहां सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, द्वारिका प्रसाद महाश्वेरी, श्रीप्रसाद एवं निरंकारदेव सेवक की कविताएँ हैं तो नए रचनाकारों में दिशा ग्रोवर, सृष्टि पांड्ये, सुषमा सिंह की भी कविताएँ हैं। इन कविताओं के चयन में नए प्रयोग और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सामने रखा गया है।

समकालीन भारतीय साहित्य के अतिथि संपादक बलराम ने कहा कि साहित्य अकादेमी बाल साहित्य को एक सम्मान की दृष्टि से देख रही है और उसके संवर्धन के लिए लगातार प्रयास कर रही है। इस पुस्तक का प्रकाशन अकादमी के उन्हीं प्रयासों का सुफल है। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादमी केवल हिंदी के ही नहीं बल्कि सभी भारतीय भाषाओं के बाल साहित्य को सस्ती कीमतों पर उपलब्ध करा रहा है और कराता रहेगा। ज्ञात हो कि कोरोना काल में लंबे समय से पुस्तकों से दूर रहे पुस्तक प्रेमियों का ध्यान रखते हुए साहित्य अकादेमी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन 9 से 23 अक्तूबर 2020 के बीच कर रही है। प्रदर्शनी में पुस्तकें 20 प्रतिशत की आकर्षक छूट पर उपलब्ध हैं एवं कुछ चुनिंदा पुस्तकों पर 75 प्रतिशत तक की छूट है। पुस्तक प्रदर्शनी पूर्वाह्न 10 बजे से सायं 6 बजे तक प्रतिदिन खुली रहेगी।

साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक प्रतिनिधि बाल कविता-संचयन का पुस्तक प्रदर्शनी में लोकार्पण करते हुये संचयन के संपादक दिविक रमेश व सचिव के. श्रीनिवासराव।